6 कविवर बिहारी

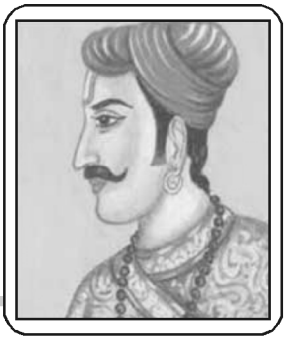

कवि-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—संवत् 1652 वि॰ (सन् 1595 ई॰)।
- **जन्म-स्थान**—बसुआ गोविन्दपुर गाँव (ग्वालियर), म॰ प्र॰।
- **पिता**—पं॰ केशवराय चौबे।
- **काव्य-गुरु**—केशवदास।
- **शिक्षा**—काव्यशास्त्र की शिक्षा (ओरक्षा में)।
- **आश्रय**—राजा जयसिंह का दरबार।
- **रचना के विषय**—शृंगार, भक्ति, नीतिपरक दोहे।
- **एकमात्र रचना**—बिहारी सतसई।
- **प्रमुख भाषा**—प्रौढ़, प्रांजल, परिष्कृत एवं परिमार्जित व्रज।
- **शैली**—मुक्तक, समास शैली।
- **मृत्यु**—संवत् 1720 वि॰ (सन् 1663 ई॰)।
- **साहित्य में योगदान**—भाव और शिल्प की दृष्टि से इनका काव्य श्रेष्ठ है। अपनी काव्यगत (भावपक्ष व कलापक्ष) विशेषताओं के कारण हिन्दी साहित्य में बिहारी का अद्वितीय स्थान है।

बिहारी हिन्दी रीतिकाल के अन्तर्गत उसकी भावधारा को आत्मसात् करके भी प्रत्यक्षतः आचार्यत्व न स्वीकार करनेवाले मुक्त कवि हैं। इनका जन्म सन् 1595 ई0 के लगभग ग्वालियर के पास बसुआ-गोविन्दपुर ग्राम में हुआ था। कुछ विद्वान इनका जन्म 1603 ई0 में मानते हैं। मध्य युग के अनेक भारतीय कवियों की भाँति इनके भी जन्म-समय के सम्बन्ध में विद्वानों में मतभेद है। इनके पिता का नाम केशवराय था। इनके एक भाई और एक बहन थी। बिहारी का विवाह मथुरा के किसी माथुर ब्राह्मण की कन्या से हुआ था। इनके कोई सन्तान न होने के कारण अपने भतीजे निरंजन को गोद ले लिया था।

कहा जाता है कि केशवराय इनके जन्म के सात-आठ वर्ष बाद ग्वालियर छोड़कर ओरछा चले गये। वहीं बिहारी ने हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि आचार्य केशवदास से काव्य-शिक्षा ग्रहण की। ओरछा में रहकर इन्होंने काव्य-ग्रन्थों के साथ ही संस्कृत और प्राकृत आदि का अध्ययन किया। आगरा जाकर इन्होंने उर्दू-फारसी का अध्ययन किया और अब्दुर्रहीम खानखाना के सम्पर्क में आये। इन्होंने अपनी काव्य-प्रतिभा से जयपुराधीश जयसिंह तथा उनकी पटरानी अनन्तकुमारी को विशेष प्रभावित किया, जिनसे इन्हें पर्याप्त पुरस्कार और ग्राम मिला तथा ये दरबार के राजकवि भी हो गये थे। जयपुर के राजकुमार रामसिंह का विद्यारम्भ संस्कार भी इन्होंने ही कराया था। अपनी पत्नी की मृत्यु के बाद बिहारी राजदरबार छोड़कर वृन्दावन चले गये और वहीं संवत् 1720 वि0 (सन् 1663 ई0) में इनका निधन हो गया था।

बिहारी ने सात सौ से कुछ अधिक दोहों की रचना की, जिनका संग्रह **'बिहारी सतसई'** के नाम से हुआ है। एक-एक दोहे में अनेक भावों को सफलतापूर्वक भर देना इन्हीं का काम था। इसीलिए कहा जाता है कि बिहारी ने **'गागर**

में सागर' भरा है। अलंकार, नायिका-भेद, प्रकृति-वर्णन तथा भाव, विभाव, अनुभाव, संचारीभाव आदि सब कुछ अड़तालिस मात्राओं के एक छोटे से छन्द दोहे में भरकर इन्होंने काव्य-कला का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया है।

प्रसिद्ध है कि जयपुर नरेश महाराजा जयसिंह अपनी नवपरिणीता नवोढ़ा रानी के प्रेम-पाश में आबद्ध हो गये। इस कारण वे दरबार में अनेक दिनों तक नहीं आये। बिहारी की एक शृंगारिक अन्योक्ति ने महाराजा को सचेत कर पुनः कर्त्तव्यपथ पर अग्रसर कर दिया। वह दोहा निम्नलिखित है—

नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं बिकासु इहिं काल।
अली, कली ही सौं बँध्यो, आगैं कौन हवाल।।

महाराज इन्हें प्रत्येक दोहे पर एक स्वर्ण-मुद्रा भेंट करते थे। 719 दोहों की सतसई सं0 1719 में समाप्त हुई। इनके दोहों के विषय में यह उक्ति प्रसिद्ध है—

सतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर।
देखन में छोटे लगैं घाव करैं गम्भीर।।

यद्यपि 'बिहारी सतसई' शृंगार-प्रधान ग्रन्थ है, पर जीवन और प्रमुख विषयों पर बिहारी ने अपना अनुभव बड़े चमत्कारिक ढंग से प्रदर्शित किया है। इन्होंने नीति, भक्ति, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद, इतिहास आदि सम्बन्धी बड़ी अनूठी उक्तियाँ लिखी हैं, जिनसे इनकी बहुमुखी काव्य-प्रतिभा पर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता। हिन्दी जगत् में इनकी सतसई का सम्मान बहुत हुआ। बड़े-बड़े महाकवियों ने इस पर टीका लिखने में गर्व समझा।

कविवर बिहारी अपनी शृंगारिक रचनाओं के लिए विशेष प्रसिद्ध हैं। इन्होंने शृंगार के संयोग एवं विप्रलम्भ दोनों ही पक्षों का सफल चित्रण किया है। संयोग-शृंगार वर्णन में बिहारी के प्रेमी और प्रेमिका में परस्पर इतनी निकटता है जिसके कारण वे अपने द्वैत भाव को भूलकर एकरूप हो जाते हैं। मिलन के प्रकरणों में मनोवैज्ञानिक चित्रण के साथ बिहारी ने सांकेतिक दृश्यों का भी अनुपम मिश्रण किया है। कवि की दृष्टि नायिका के बाह्य रूप-सौन्दर्य के वर्णन, नख-शिख-वर्णन-विवेचन में जितनी रमी है उतनी आन्तरिक रमणीयता के प्रकाशन में नहीं। इनके काव्य में जहाँ पारम्परिक शृंगार का वर्णन है वहाँ मौलिक उद्‌भावनाएँ भी प्राप्त होती हैं। आलम्बन के विशद वर्णन के साथ उद्‌दीपन के चित्र भी मिलते हैं।

सतसई की भाषा बड़ी ही प्रौढ़, प्राञ्जल, परिष्कृत और परिमार्जित ब्रज-भाषा है। परन्तु इसमें उस समय के प्रचलित अरबी-फारसी के शब्दों का भी बिहारी ने प्रयोग किया है। भाषा का आलंकारिक गुण देखा जाय तो इन्होंने अनुप्रास की योजना बहुत सावधानी से की है। बिहारी ने मुक्तक भाषा शैली को स्वीकार किया है, जिसमें समासशैली का अनूठा योगदान है। इसीलिए 'दोहा' जैसे छोटे छन्द में भी उन्होंने अनेक भावों को भर दिया है। बिहारी को 'दोहा, छन्द' सर्वाधिक प्रिय हैं। इनका सम्पूर्ण काव्य इसी छन्द में रचा गया है। बिहारी अलंकारों के प्रयोग में निपुण थे। इन्होंने छोटे-छोटे दोहों में अनेक अलंकारों का समायोजन किया है। इनके काव्य में श्लेष, उपमा, रूपक, उप्रेक्षा, अन्योक्ति और अतिशयोक्ति अलंकारों का अधिक प्रयोग हुआ है।

बिहारी के समान इतनी कम रचना करके इतना अधिक सम्मान प्राप्त करनेवाला हिन्दी का कोई दूसरा कवि समझ में नहीं आता। इनको जो सम्मान मिला, वह इसलिए नहीं कि ये कविता के उस क्षेत्र में अकेले हैं, बल्कि इसलिए कि इन्होंने रचना के लिए शृंगार का जो क्षेत्र चुना, उसमें उसी ढंग की मुक्तक रचना करनेवाला कवि जनता और काव्य-मर्मज्ञों की दृष्टि में इनसे बढ़कर नहीं है। मुक्तक रचना में जितनी भी विशेषताएँ सम्भाव्य हैं, इनकी रचना में सब पायी जाती हैं और वे अपने चरम उत्कर्ष को पहुँची हुई हैं।

●●●

भक्ति एवं श्रृंगार

[प्रस्तुत दोहे कविवर बिहारी द्वारा रचित 'बिहारी सतसई' से अवतरित हैं। बिहारी ने पूर्ववर्ती भक्तिपरक रचनाओं का गम्भीर अध्ययन किया था। ये और इनके पिता हरिदासी सम्प्रदाय के स्वामी नरहरिदास के शिष्य थे। दरबारी विलासिता के वातावरण तथा श्रृंगारी जन-रुचि के कारण ही इन्होंने श्रृंगारपरक रचना की। परन्तु इनमें भक्ति सम्बन्धी संस्कार थे और इनकी आत्मा में भक्त की सच्ची पुकार थी।]

करौ कुबत जगु, कुटिलता तजौं न, दीनदयाल।
दुखी होहुगे सरल हिय बसत, त्रिभंगी लाल।।1।।

अजौं तर्‌यौना ही रह्‌यौ श्रुति सेवत इक रंग।
नाक बास बेसरि लह्‌यौ बसि मुकतनु कैं संग।।2।।

मकराकृति गोपाल कैं सोहत कुंडल कान।
धर्‌यो मनौ हिय घर समरु ड्‌यौढ़ी लसत निसान।।3।।

बतरस-लालच लाल की, मुरली-धरी लुकाइ।
सौंह करै भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ।।4।।

कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु ही सौं बात।।5।।

कर लै, चूमि, चढ़ाइ सिर, उर लगाइ, भुज भेटि।
लहि पाती पिय की लखति, बाँचति, धरति समेटि।।6।।

अंग-अंग-नग जगमगत दीप सिखा सी देह।
दिया बढ़ाऐं हूँ रहै, बड़ौ उज्यारौ गेह।।7।।

सहज सेत पँचतोरिया पहिरत अति छबि होति।
जल चादर के दीप लौं जगमगाति तन-जोति।।8।।

कंज-नयनि मंजनु किए, बैठी ब्यौरति बार।
कच-अँगुरी-बिच दीठि दै, चितवति नंदकुमार।।9।।

औंधाई सीसी, सु लखि बिरह-बरनि बिललात।
बिच ही सूखि गुलाबु गौ, छीटौ छुई न गात।।10।।

करी बिरह ऐसी, तऊ गैल न छाड़तु नीचु।
दीनैं हूँ चसमा चखनु चाहै लहैं न मीचु।।11।।

पिय कैं ध्यान गही गही रही वही ह्वै नारि।
आपु आपु ही आरसी लखि रीझति रिझवारि।।12।।

जोग-जुगति सिखए सबै मनौ महामुनि मैन।
चाहत पिय-अद्वैतता काननु सेवत नैन।।13।।

मूड़ चढ़ाऐंऊ रहै परयौ पीठि कच-भारु।
रहै गरैं परि, राखिबौ तऊ हियैं पर हारु।।14।।

रहौ, गुही बेनी, लखे गुहिबे के त्यौनार।
लागे नीर चुचान, जे नीठि सुखाए बार।।15।।

कर-मुँदरी की आरसी प्रतिबिंबित प्यौ पाइ।
पीठ दियैं निधरक लखै, इकटक डीठि लगाइ।।16।।

खेलन सिखए, अलि, भलैं चतुर अहेरी मार।
कानन-चारी नैन-मृग नागर नरनु सिकार।।17।।

ललन, सलोने अरु रहे अति सनेह सौं पागि।
तनक कचाई देत दुख सूरन लौं मुँह लागि।।18।।

अनियारे, दीरघ दृगनु किती न तरुनि समान।
वह चितवनि औरै कछू, जिहिं बस होत सुजान।।19।।

क्यौं बसियै, क्यौ निबहियै, नीति नेह-पुर नाँहि।
लगालगी लोइन करैं, नाहक मन बँधि जाँहि।।20।।

दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित प्रीति।
परति गाँठि दुरजन हियैं, दई, नई यह रीति।।21।।

('बिहारी-रत्नाकर' से)

अभ्यास प्रश्न

➥ पद्यांश पर आधारित प्रश्न

1. निम्नलिखित पद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) करौ कुबत जगु, कुटिलता तजौं न, दीनदयाल।
दुखी होहुगे सरल हिय बसत, त्रिभंगी लाल।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) बिहारी अपनी कुटिलता का त्याग क्यों नहीं करना चाहते हैं?
(iv) प्रस्तुत दोहे में कौन-सा अलंकार है?
(v) बिहारी को अपनी कुटिलता छोड़ने पर भगवान श्रीकृष्ण को क्या कष्ट होगा?

(ख) बतरस-लालच लाल की, मुरली-धरी लुकाइ।
सौंह करै भौंहनु हँसै, दैन कहैं नटि जाइ।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) राधा श्रीकृष्ण की मुरली क्यों छिपा देती हैं?
(iv) राधा ने मुरली के बारे में श्रीकृष्ण से क्या कहा?
(v) प्रस्तुत दोहे में कौन-सा रस है?

(ग) कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हैं नैननु ही सौं बात।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं पाठ का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) नायिका के मना करने की चेष्टा का नायक पर क्या प्रभाव पड़ा?
(iv) नायक-नायिका ने किसके संकेत से एक-दूसरे से मिलने के लिए कहा?
(v) कहत-नटत, रीझत, मिलत-खिलत, लजियात तथा भरे भौन में कौन-सा अलंकार है?

(घ) कंज-नयनि मंजनु किए, बैठी ब्यौरति बार।
कच-अँगुरी-बिच दीठि दै, चितवति नंदकुमार।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) बाल सुलझाती हुई नायिका बालों के मध्य से किसे देखने का प्रयास कर रही है?
(iv) प्रस्तुत दोहे में नन्द शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(v) प्रस्तुत दोहे में कौन-सा अलंकार है?

(ङ) मूड़ चढ़ाऐंऊ रहै परयौ पीठि कच-भारु।
रहै गरैं परि, राखिबौ तऊ हियैं पर हारु।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) योग्य व्यक्ति के बारे में बिहारी के क्या विचार हैं?
(iv) बाल और हार के सन्दर्भ में बिहारी के क्या विचार हैं?
(v) प्रस्तुत दोहे में कौन-सा अलंकार है?

(च) कर-मुँदरी की आरसी प्रतिबिंबित प्यौ पाइ।
पीठ दियैं निधरक लखै, इकटक डीठि लगाइ।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) नायिका किस मुद्रा में बैठी हुई है?
(iv) नायिका अँगूठी के दर्पण में क्या देख रही है?
(v) प्रस्तुत दोहे में कौन-सा अलंकार है?

(छ) दृग उरझत टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित प्रीति।
परति गाँठि दुरजन हियैं, दई, नई यह रीति।।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त पद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
अथवा पद्यांश के कवि एवं शीर्षक का नाम लिखिए।
(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(iii) नायक-नायिका के प्रेम का दुष्टों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(iv) प्रेमी और प्रेमिका का प्रेम और अधिक गहरा किस स्थिति में हो जाता है?
(v) प्रस्तुत दोहे में कौन-सा अलंकार है?

➥ दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित काव्य-सूक्तियों की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए—
(क) नाक बास बेसरि लह्यौ बसि मुकतनु कैं संग।
(ख) दीनैं हूँ चसमा चखनु चाहै लहैं न मीचु।
(ग) भरे भौंन मैं करत हैं; नैननु हीं सौं बात।
(घ) वह चितवनि औरे कछू, जिहिं बस होत सुजान।
(ङ) परति गांठि दुरजन हियै दई नई यह रीति।
2. बिहारी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
3. बिहारी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
अथवा बिहारी का जीवन-परिचय लिखिए।
4. बिहारी का जीवन-परिचय देते हुए उनकी कृतियों तथा साहित्यिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
5. बिहारी को 'रीतिमुक्त कवि' कहना कहाँ तक उचित है? सतर्क उत्तर दीजिए।
6. संकलित दोहों के आधार पर बिहारी की बहुज्ञता को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
7. सिद्ध कीजिए कि बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है।
8. "मुक्तक काव्य की सभी विशेषताएँ बिहारी के दोहों में प्राप्त हैं।" उदाहरण देकर समझाइए।
9. बिहारी के स्वपठित दोहों के आधार पर उनकी भक्ति-भावना का निरूपण कीजिए।
10. "बिहारी ने श्रृंगार के संयोग और वियोग दोनों ही पक्षों के बड़े सरस वर्णन प्रस्तुत किये हैं।" समुचित उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए।

11. कविवर बिहारी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
12. ''बिहारी सतसई शृंगार तथा नीति की सुन्दर विवेचना करती है।'' विवेचना कीजिए।

➥ लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बिहारी ने सामान्य मनुष्य में किन नैतिक आदर्शों की प्रतिष्ठा की है?
2. बिहारी सतसई की लोकप्रियता के प्रमुख कारण बताइए।
3. बिहारी की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. बिहारी के संयोग शृंगार का वर्णन कीजिए।
5. 'सतसइया के दोहरे ज्यों नावक के तीर' के आधार पर बिहारी के दोहों की विशेषताएँ निरूपित कीजिए।
6. ''बिहारी को रीति काल का प्रतिनिधि कवि कहा जाता है।'' तर्कसहित इस कथन की पुष्टि कीजिए।

➥ काव्य-सौन्दर्यात्मक प्रश्न

1. निम्नलिखित पंक्तियों में काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए—
   (क) दुखी होहुगे सरल हिय बसत त्रिभंगी लाल।
   (ख) जल चादर के दीप लौं जगमगाति तन-जोति।
2. दोहा एवं सोरठा छन्द का लक्षण लिखते हुए पठित अंश से एक-एक उदाहरण दीजिए।

●●●